अर्थ :-

मनसब का अर्थ पद है और यह मनसबदारी व्यवस्था मुगल प्रशासनिक संस्थान थी। उसके शासन का आधार स्तंभ थी। इसमें अमीरों और सैन्य नौकरशाही को एकसूत्र में संगठित किया जाता था।

उद्देश्य :-

(1) मुगल साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण करना।

(2) मुगल अभिजात्य / कुलीन वर्ग को प्रशासन में शामिल करना और इस माध्यम से उनकी वफादारी राज्य के प्रति सुनिश्चित करना।

(3) सैनिक - असैनिक सेवाओं का कुशलता पूर्वक संचालन करना।

विशेषताएं -

मनसबदारों की नियुक्ति, पदोन्नति एवं उन पर नियंत्रण प्रत्यक्ष रूप से सम्राट द्वारा किया जाता है था। इस व्यवस्था में मीर बख्शी मनसबदारों की सूची सम्राट के सम्मुख प्रस्तुत करता था और मनसबदारों को जागीर आवंटन करने का कार्य 'दीवान-ए-आला' का होता था।

⇒ मनसबदारी व्यवस्था वंशानुगत नहीं थी। मनसबदारों का वेतन नगद एवं जागीर के रूप में दिया जाता था।

⇒ मनसब व्यवस्था में 'जात' एवं 'सवार' के दोहरे दर्जे को लागू किया गया। जात से किसी मनसबदार के वेतन और उसकी पदानुक्रम स्थिति

Scanned with CamScanner

का पता चलता था तो सवार पद से उसके सैनिक उत्तरदायित्व का बोध होता था।

⇒ सवार पद की संख्या किसी भी स्थिति में जात पद से अधिक नहीं हो सकती थी।

⇒ जात और सवार के आधार पर मनसबदारों की 3 श्रेणियां बनती थी -

- प्रथम श्रेणी जहाँ जात एवं सवार पद बराबर होता था।
- द्वितीय श्रेणी जहाँ सवार पद, जात पद से आधा या आधे से ज्यादा होता था।
- तृतीय श्रेणी जहाँ सवार पद, जात पद से आधा से कम होता था।

⇒ मनसबदारों को किसी भी प्रशासनिक, सैनिक पद पर या बादशाह के व्यक्तिगत सेवा में रखा जा सकता था। इस तरह यह सैनिक एवं असैनिक स्वरूप से युक्त थी।

शासकों के समय हुए परिवर्तन :-

अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था की शुरुवात की एवं जात व सवार का पद निर्मित किया। जहाँगीर ने 'दो अस्पा सि अस्पा' पद्धति लाई जिसके तहत जात पद बढ़ाये बिना ही सवारों की संख्या में वृद्धि की जा सकती थी। इसका फायदा यह हुआ कि राजकोष पर

Scanned with CamScanner

अतिरिक्त बोझ डाले बिना ही सैन्य संगठन का विस्तार हुआ।

⇒ शाहजहाँ ने मनसबदारी व्यवस्था के अंतर्गत 'महाना वेतन पद्धति' लागू की। इसके अंतर्गत मनसबदारों का वेतन महीने के आधार पर दिया गया।

⇒ जागीर/जागीरदारी व्यवस्था :- यह मनसब व्यवस्था से जुड़ी हुई थी। वस्तुतः मनसबदार के वेतन प्रायः जागीर के रूप में प्रदान किये जाते थे। इसके तहत एक निश्चित भू-भाग की अनुमानित आय वेतन के रूप में दी जाती थी और इन जागीरदारों का अधिकार केवल राजस्व प्राप्ति तक ही था। उन्हें यहाँ प्रशासनिक अधिकार नहीं था। यहाँ इक्तादारी व्यवस्था से अंतर दीखता है। इक्तादारों को राजस्व एवं प्रशासनिक दोनों अधिकार थे। इसी तरह जागीर व्यवस्था में फवाजिल की अवधारणा में नहीं थी जबकि इक्तादारी व्यवस्था में यह मौजूद थी। इसी तरह जागीरदारी व्यवस्था सामंती व्यवस्था से अंतर लिए हुए थी। सामंत का भू-क्षेत्र पर वंशानुगत अधिकार था।

जागीर के प्रकार -

मनसबदारों को वेतन के रूप में दी गई जागीर 'तनख्वाह' जागीर कहलाती थी। राजपूतों को उन्हीं के क्षेत्रों में दी गई जागीर 'वतन जागीर' कहलाती थी। इस तरह

Scanned with CamScanner

मुसलमानों को उनके जन्म क्षेत्र के पास दी गई जागीर 'अलतमगा जागीर' कहलाती थी।

⇒ जागीर भूमि में कमी आने के कारण बेजागिरी की समस्या सामने आई। तो दूसरी तरफ जागीर में होने वाली वसुली की समस्या के कारण 'जोतलब' जागीर के रुप में उसकी पहचान हुई। तो जहाँ आसानी से राजस्व वसुली होती थी उसे 'सैर हासिल' जागीर कहा जाता था।

⇒ सैर हासिल जागीर को प्राप्त करने के लिए दरबारी गुटबंदी को बढ़ावा मिला। इतना ही नहीं जमादामी (अनुमानित आय) तथा हासिलदामी (वास्तविक आय) में अंतर के कारण जागीरदार उत्पीड़क बन गये और कृषकों का शोषण हुआ। अतः कृषि संकट जाट एवं सतनामी जैसे कृषक विद्रोह सामने आये।

मूल्यांकन:-

सकारात्मक -

मनसबदारी व्यवस्था मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में सहायक सिद्ध हुयी। वस्तुतः यह ब्रिटिश सिविल सेवा के इस्पाती ढ़ांचा (Steal Frame) के समान थी।

⇒ एक संगठित एवं वफादार प्रशासनिक वर्ग का निर्माण

Scanned with CamScanner

हुआ जिससे मुगल साम्राज्य की आवश्यकतायें पूरी हुई।

⇒ राजपूत वर्ग को शासन में शामिल करने में सुगमता हुई क्योंकि मनसब व्यवस्था उच्च पद और सम्मान से जुड़ी थी।

⇒ सैन्य संगठन का विस्तार हुआ। फलतः मुगल राज्य का प्रादेशिक विस्तार हुआ। शासन के केंद्रीकरण की प्रवृति में वृद्धि हुई क्योंकि मनसबदारों की नियुक्ति, पदोन्नति एवं अवनति सम्राट द्वारा की जाती थी और उन्हें साम्राज्य के किसी भी क्षेत्र में कार्य करने हेतु नियुक्त किया जा सकता था। इस दृष्टि से यह अखिल भारतीय केंद्रीय सेवाओं के ~~समकक्ष~~ समकक्ष थी।

⇒ मनसबदारों के वर्ग में विभिन्न क्षेत्र तथा वर्ग के लोगों को स्थान मिला। फलतः एकीकरण की भावना को प्रोत्साहन मिला।

⇒ मनसबदारों की जीवन शैली एवं रुचियों के कारण व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला तो साथ ही उनकी आर्थिक संपन्नता से विभिन्न कलाकारों, लेखकों के संरक्षण से क्षेत्रीय कला, साहित्य, भाषा एवं लोकसंगीत को बढ़ावा मिला।

⇒ इसने राजनीतिक, प्रशासनिक क्षेत्र के साथ-2 सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में भी प्रभाव डाला और सामासिक संस्कृति के विकास में अपनी भूमिका निभाई।

Scanned with CamScanner

Date
12 March, 16

नकारात्मक :-

जागीरदारी व्यवस्था में जागीरदारों की शोषक प्रवृत्ति का विकास हुआ। अतः किसानों का शोषण बढ़ा। फलतः किसान विद्रोह भी सामने आये।

⇒ जागीरदारों के स्थानान्तरण की वजह से इनका ध्यान कृषि के विकास पर नहीं रहा। राजस्व प्राप्ति ही मुख्य लक्ष्य था। अतः कृषक शोषण में वृद्धि हुई। फलतः किसान खेत छोड़कर भागने लगे। अतः उत्पादन में कमी आई जिसका मुगल राजकोष पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

कुल मिलाकर मनसबदारी व्यवस्था अकबर की एक मौलिक सोच थी और उसने मुगल सत्ता को सुदृढ़ किया किंतु मुगल साम्राज्य के विस्तार के साथ ही मनसबदारी जागीरदारी व्यवस्था में पैदा हुई कमजोरियों ने मुगल साम्राज्य को कमजोर भी किया। फलतः उसके पतन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

Scanned with CamScanner